राजा का झरना

लेखन : लॉयड एलेग्जेंडर
चित्र : एज़रा जैक कीट्स

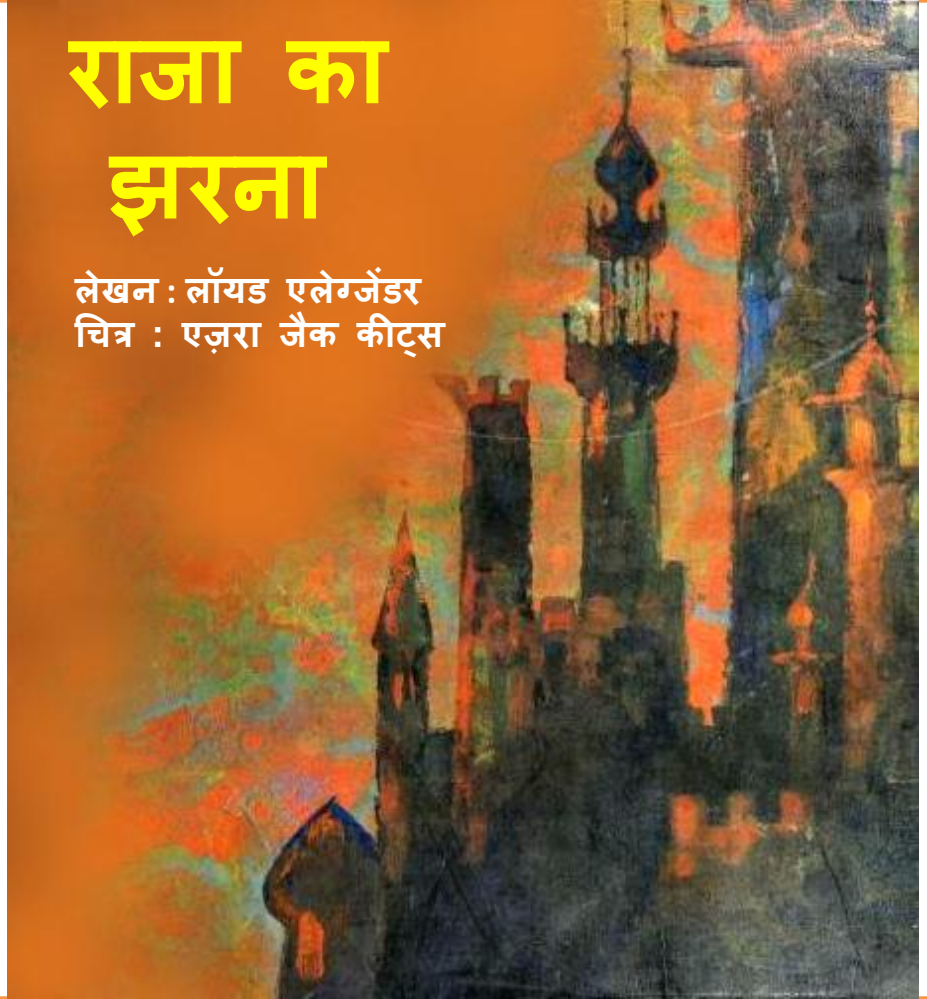

राजा का झरना

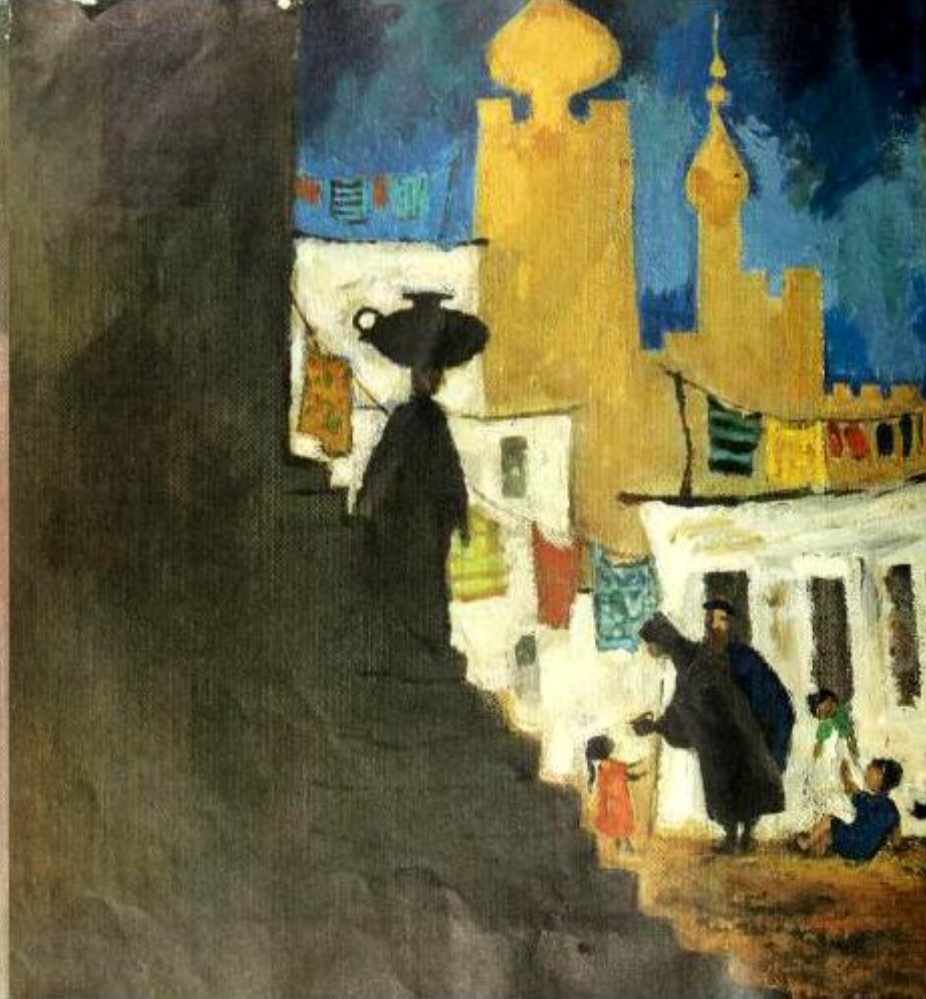

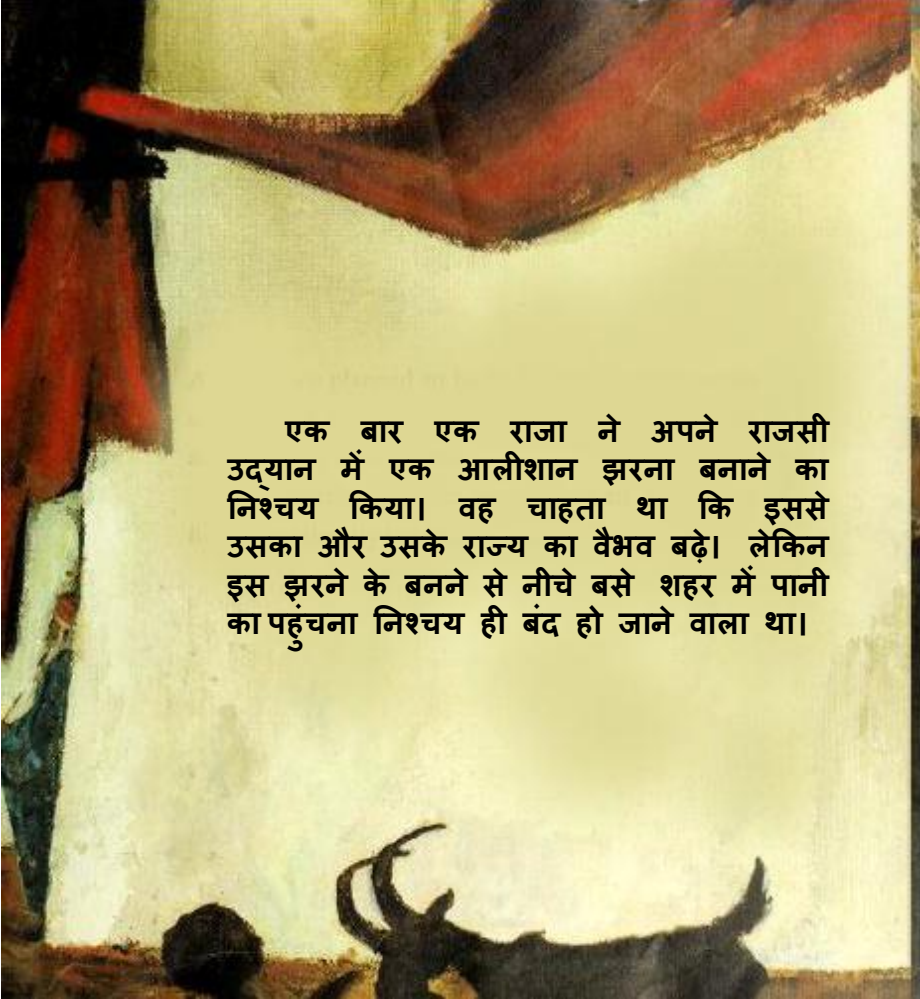

एक बार एक राजा ने अपने राजसी उद्यान में एक आलीशान झरना बनाने का निश्चय किया। वह चाहता था कि इससे उसका और उसके राज्य का वैभव बढ़े। लेकिन इस झरने के बनने से नीचे बसे शहर में पानी का पहुंचना निश्चय ही बंद हो जाने वाला था।

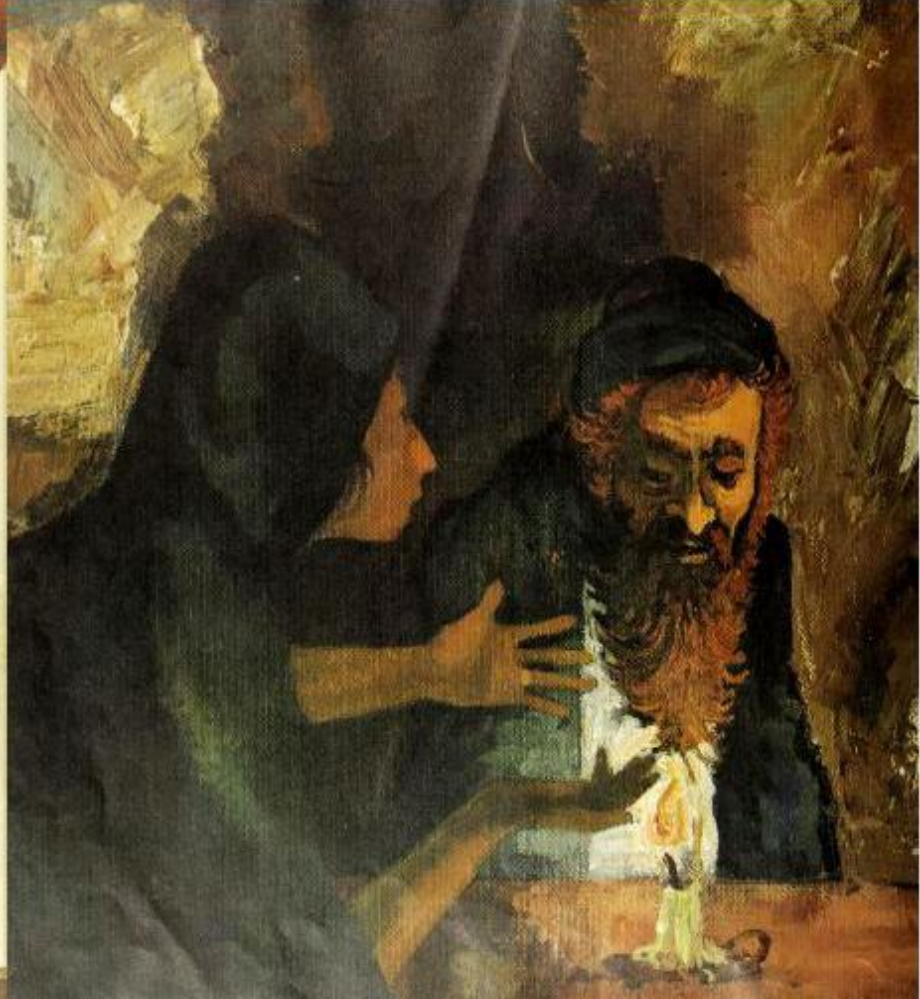

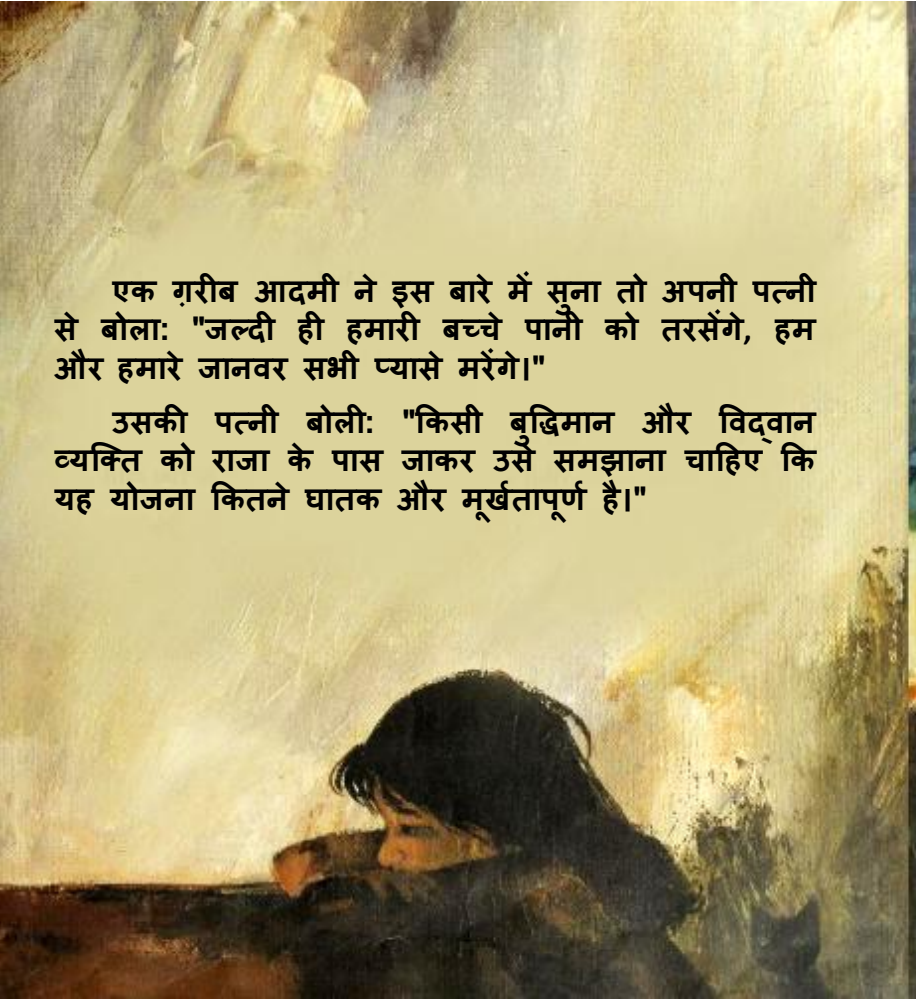

एक ग़रीब आदमी ने इस बारे में सुना तो अपनी पत्नी से बोला: "जल्दी ही हमारी बच्चे पानी को तरसेंगे, हम और हमारे जानवर सभी प्यासे मरेंगे।"

उसकी पत्नी बोली: "किसी बुद्धिमान और विद्वान व्यक्ति को राजा के पास जाकर उसे समझाना चाहिए कि यह योजना कितने घातक और मूर्खतापूर्ण है।"

वह गरीब आदमी एक-एक कर पूरे शहर में सारे विद्वान व्यक्तियों के पास गया और उनसे मिन्नतें कीं कि वे राजा को समझाएं। लेकिन अपने अहंकार में खोये उन लोगों ने उसकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया। वे तो अपनी बड़ी बड़ी बातों में विचारमग्न थे, उन्हें इन तुच्छ मसलों में कोई रुचि न थी।

उल्टा वे उसे ही अपने आसमानी मसलों पर व्याख्यान देने लगे, जो उसे रत्ती भर भी पल्ले न पड़े।

वह सर लटका कर वापस चला आया और सोचने लगा: "काश, इन बड़ी बड़ी बातों से इंसान की प्यास बुझ पाती। वैसे भी ऐसे ऊँचे ज्ञान का क्या फायदा जिसे आम लोग समझ ही न पाएं।

उसे लगा कि किसी वाक्चतुर व्यक्ति द्वारा राजा को यह बात ठीक प्रकार से बतानी चाहिए जिससे कि राजा मसले को ध्यान से सुने और समझ सके।

इसलिए वह बाजार में ऐसे सौदागरों के पास गया जो अपनी लच्छेदार बातों द्वारा लोगों को प्रभावित करने में माहिर थे।

लेकिन जब उन सौदागरों ने सुना कि वह क्या चाहता था, तो डर के मारे उनकी माहिर ज़ुबानें भी चुप्पी साध गयीं। चतुरता भरी सलाहें देना उन्हें खूब आता था, लेकिन राजा के सामने जाने की हिम्मत किसी में न थी।

बेचारे ग़रीब आदमी ने थक हार कर अपनी राह पकड़ी, और सोचने लगा: "अफ़सोस, इनकी मीठी बातें एकदम खोखली हैं, क्योंकि ये कुछ करने की हिम्मत नहीं रखते। जब तक दिल में हिम्मत न हो, इन चतुर बातों का क्या लाभ?"

तब उसे लगा कि किसी साहसी और मज़बूत इरादे वाले इंसान को जाकर राजा पर दबाव डालना चाहिए कि वह इस बेवकूफी की योजना तो छोड़ दे।

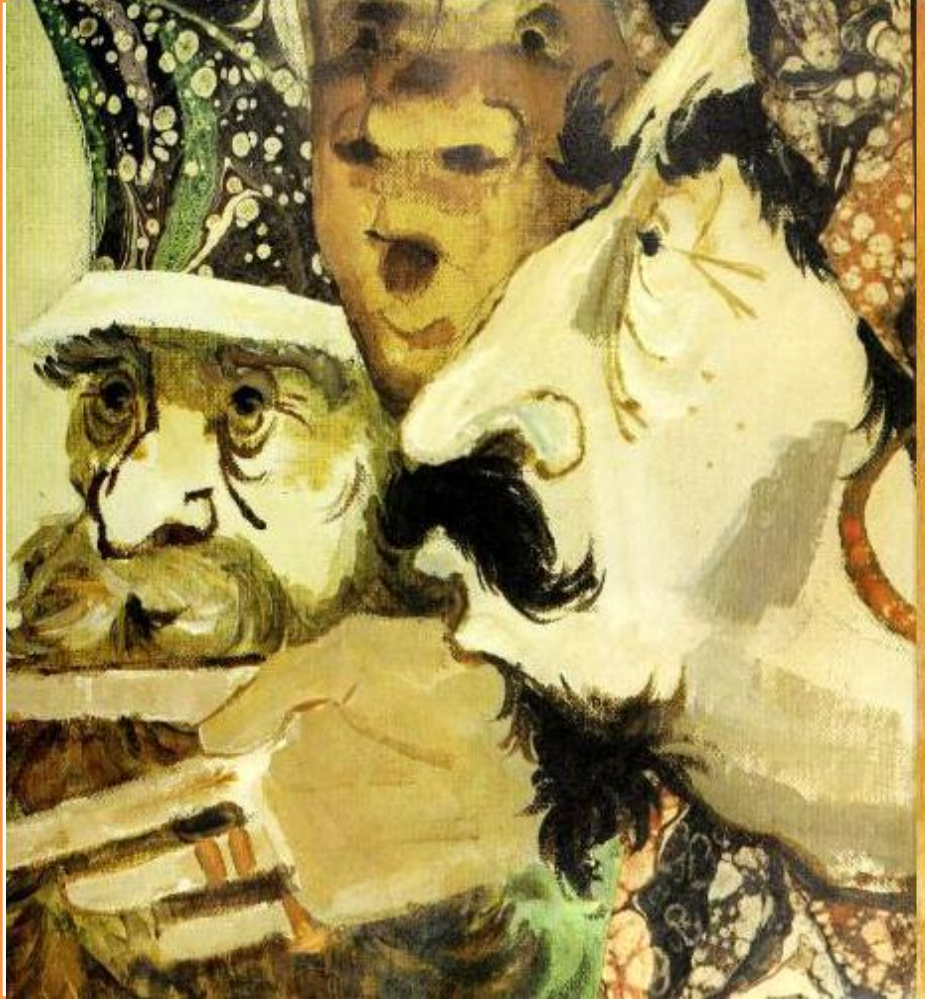

फिर उसने शहर भर में घूम कर एक सबसे ताकतवर और मज़बूत इंसान को खोजा। वह था एक निडर लोहार, जो लोहे के सरियों को ऐसे तोड़-मरोड़ देता जैसे जूते का फीता बांध रहा हो।

राजा से आमना-सामना करने का विचार लोहार को भा गया। वह कहने लगा कि महल में घुसते ही वह सारी खिड़कियां तोड़ देगा, दीवारें चटका देगा, और राजा का सिंहासन चकनाचूर कर देगा।

ग़रीब आदमी का सर फिर निराशा से झुक गया। वह जानता था कि लोहार ने ऐसा एक भी काम किया तो महल के सैनिक उसे तुरंत मार गिरायेंगे। और गुस्साये राजा का झरना बनाने का इरादा और भी मज़बूत हो जायेगा। अतः, जोश से छाती ठोकते लोहार को वहीं छोड़ वह एक बार फिर निराश होकर चल दिया, और सोचने लगा: "बाज़ू कितने ही ताकतवर हों, बुद्धिमान सोच के बिना बेकार हैं। वैसे भी, ऐसी हिम्मत-ताकत का क्या फायदा जो उद्देश्य को पूरा न कर सके।"

सारी उम्मीद छोड़कर बुझे दिल से वह पैर घसीटता घर वापस आया, और अपने घरवालों और पड़ोसियों से बोला कि उसे कोई भी ऐसा नहीं मिला जो झरने को बनने से रोक सके।

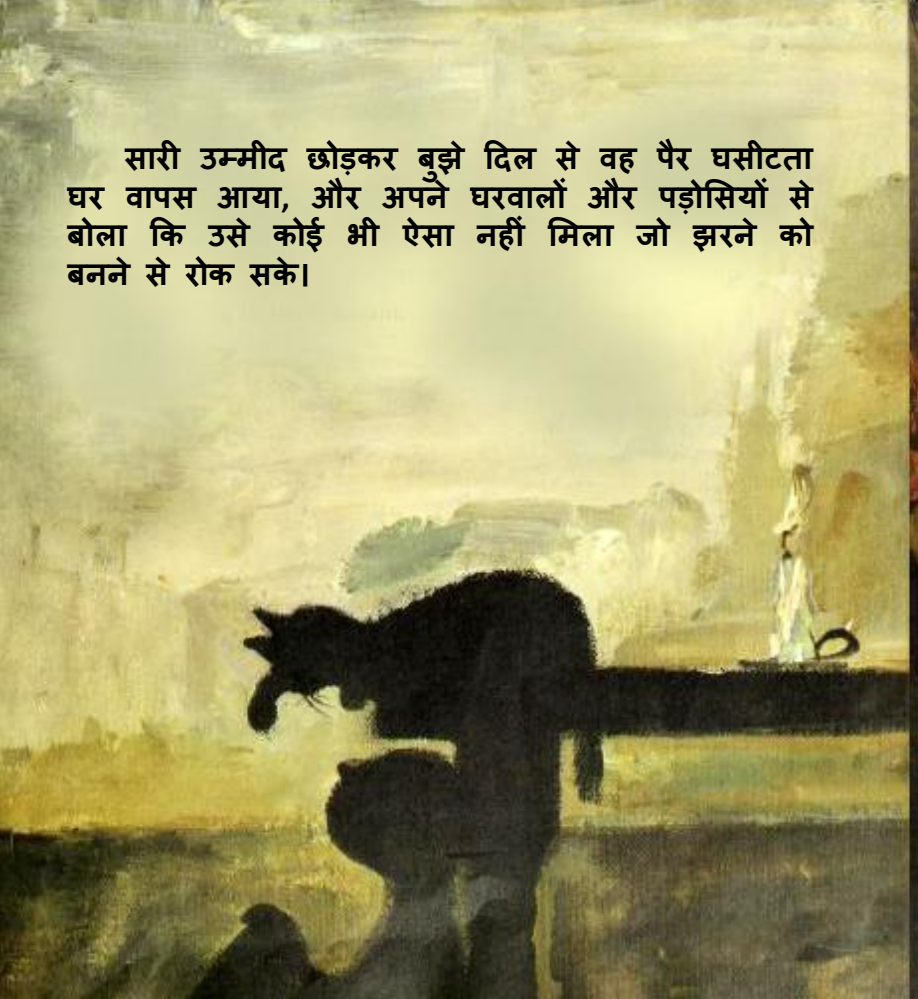

फिर उसके बेटी उससे बोली: "लेकिन पिताजी, आप खुद ही क्यों नहीं जाते।"

दुविधा में निरुत्तर, बेचारा गरीब अपनी पत्नी और परिवार वालों का मुँह देखता रहा। आख़िरकार, सर झुका कर धीमी आवाज़ में बुदबुदाया: "मेरी बेटी शायद ठीक ही कहती है। और कोई यह काम नहीं करेगा, मुझे खुद ही जाना होगा।"

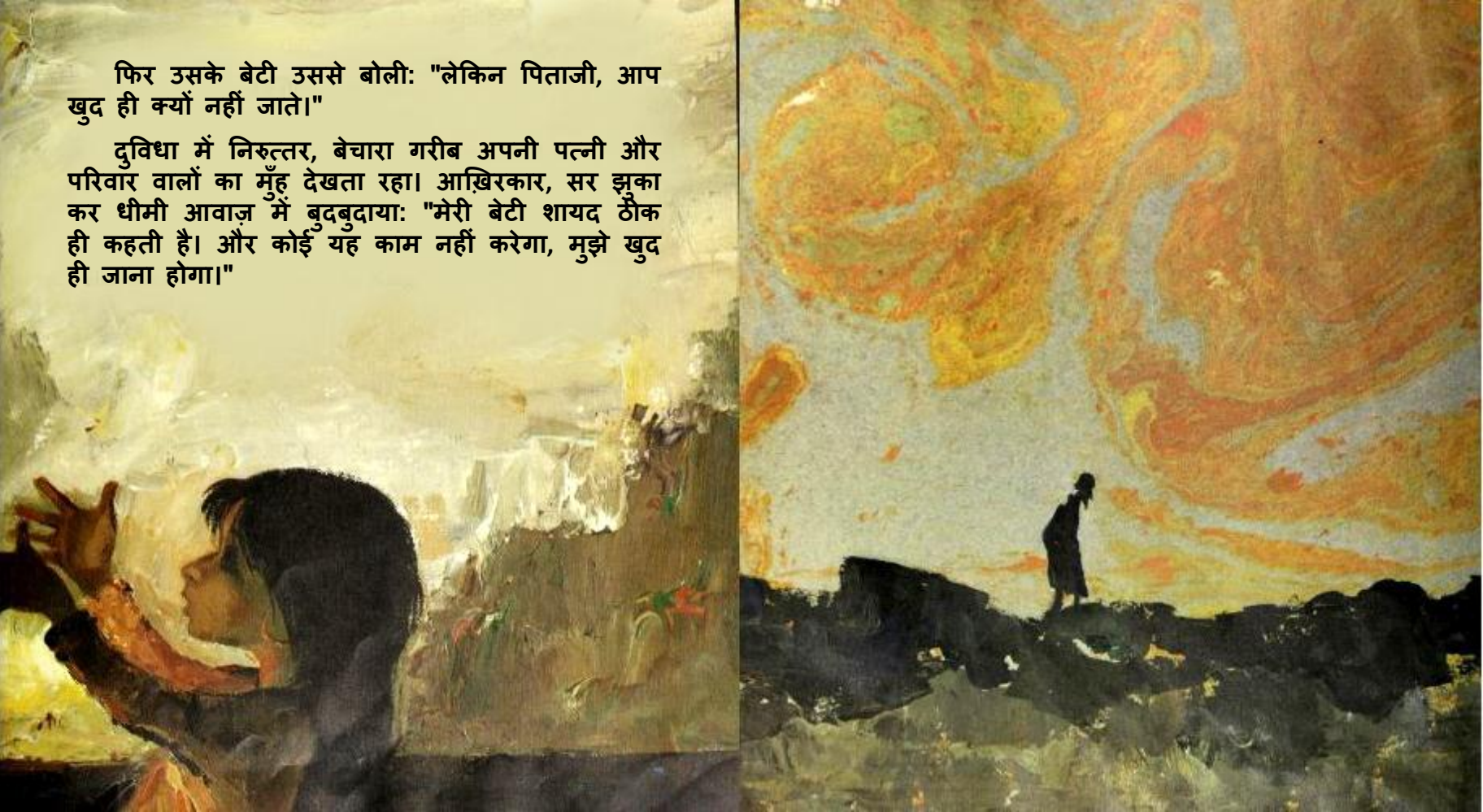

गरीब आदमी अपने घर से चला और धीरे-धीरे उस ऊंची पहाड़ी पर कदम बढ़ाने लगा, जिसकी चढ़ाई ख़त्म होने का नाम ही नहीं ले रही थी।

आख़िरकार वह राजा के महल तक पहुँच ही गया. और बड़ी देर तक महल के बाहर डरा-सहमा सा खड़ा रहा।

महल के सिपाही उसे राजा के दरबार में ले गए, और राजा ने क्रोधपूर्वक उससे आने का कारण पूछा।

कांपते पांवों से, डर से हकलाते हुए, वह राजा को बतलाने की कोशिश करने लगा कि झरना बनने की वजह से लोगों के लिए कितनी मुसीबतें खड़ी हो जाएंगी।

"बस, बहुत हुआ ", राजा ने गरज कर कहा। "तुम मेरे फैसले पर सवाल उठाते हो? जानते नहीं मैं राजा हूँ?"

गरीब आदमी ने सोचा, काश, उन विद्वानों के ज्ञान का कुछ अंश मात्र मेरे पास भी होता।

लेकिन बेचारा हकलाती आवाज़ से इतना ही बोल सका: "महाराज, प्यास तो प्यास है, गरीब आदमी को भी उतनी ही लगती है, जितनी किसी राजा को।"

फिर उसके मुँह में ज़ुबान सूख सी गई, और वह सोचने लगा, काश मैं भी उन सौदागरों की तरह लच्छेदार बातें कर पाता।

राजा ने आँखें तरेरकर उसकी ओर देखा, और बोला: "तो तुम मुझे इस बात के लिए परेशान करने आये हो? मेरे चुटकी बजाते ही ये सिपाही तुम्हारा सर धड़ से अलग कर सकते हैं।"

ग़रीब आदमी ने सोचा, काश मेरे पास ज़र्रा भर भी उस लोहार की ताकत का होता। अपनी हिम्मत के आखिरी क़तरे जुटा कर उसने जवाब दिया: “यक़ीनन आप मुझे मार डालने की ताक़त रखते हैं। लेकिन उससे क्या फर्क पड़ता है? आपकी प्रजा फिर भी प्यास से मरेगी। जब जब आप अपने शानदार झरने को देखेंगे, यह बात आपके ज़हन को कचोटती रहेगी।”

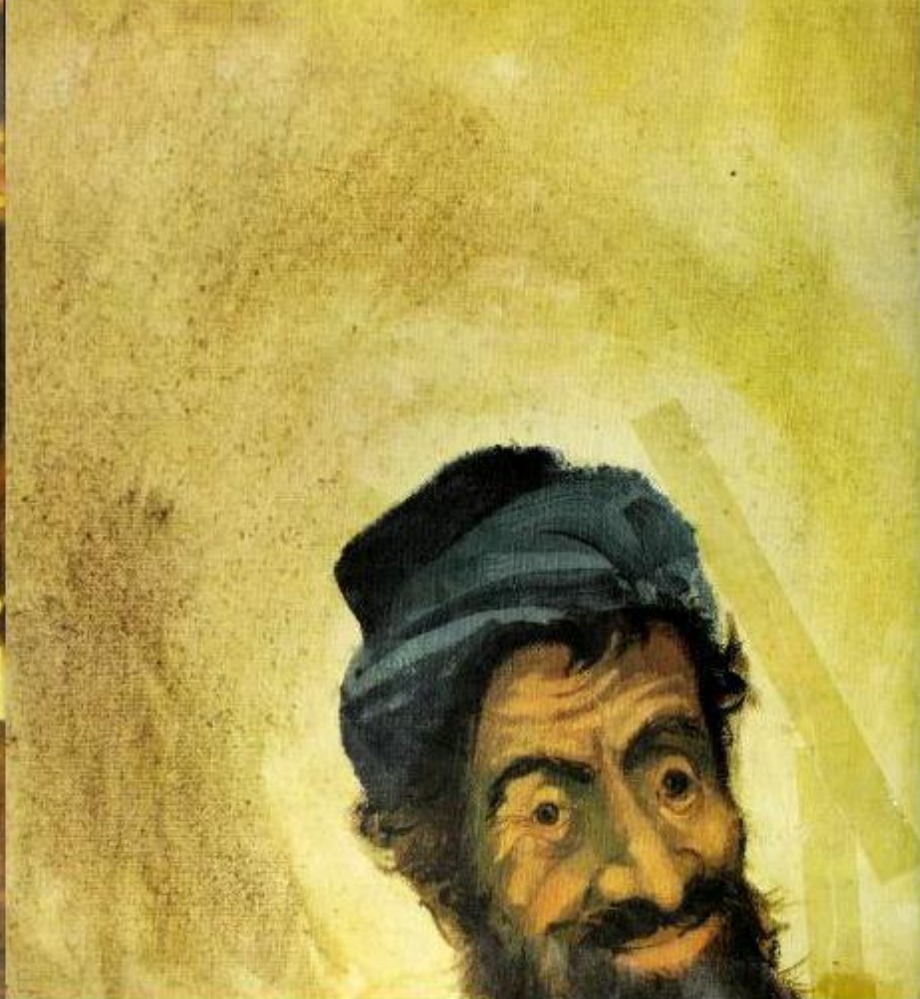

राजा उठ खड़ा हुआ, अपने सिपाहियों को बुलाने के लियें। लेकिन फिर पल भर को ठिठका, चुप खड़ा रहा, और फिर गहरे सोच में डूब गया। फिर उसने जवाब दिया:

"तुम भोले भाले इंसान हो, चतुराईपूर्वक अपनी बात रखने की काबिलियत तुममें नहीं है। लेकिन तुम्हारी बुद्धि बहुत से विद्वानों से अधिक समझदार है। भले ही तुम अटक-अटक कर बोलते हो, लेकिन किसी चालाक सलाहकार की चाटुकार भाषा की अपेक्षा तुम्हारे शब्दों में एक सच्चाई और ईमानदारी झलकती है। हालाँकि शरीर से तुम कमज़ोर हो, लेकिन तुम्हारा ह्रदय मेरे राज्य के किसी भी व्यक्ति से अधिक साहसी है। मैं वही करूँगा जैसा तुम कहते हो।

गरीब आदमी अपने गांव लौट आया, और सबको यह खबर सुनाई। विद्वान व्यक्ति ने विस्तार से इस घटना का विवरण अपनी एक पुस्तक में लिखा, लेकिन वह पुस्तक कहीं खो गई। सौदागर लोग बढ़ा-चढ़ा कर इस घटना का सबसे बखान करते थे। लोहार तो इतना उत्साहित हो गया कि उसने अपनी निहाई को हवा में उछाला और अपने ही घर की खिड़की तोड़ बैठा।

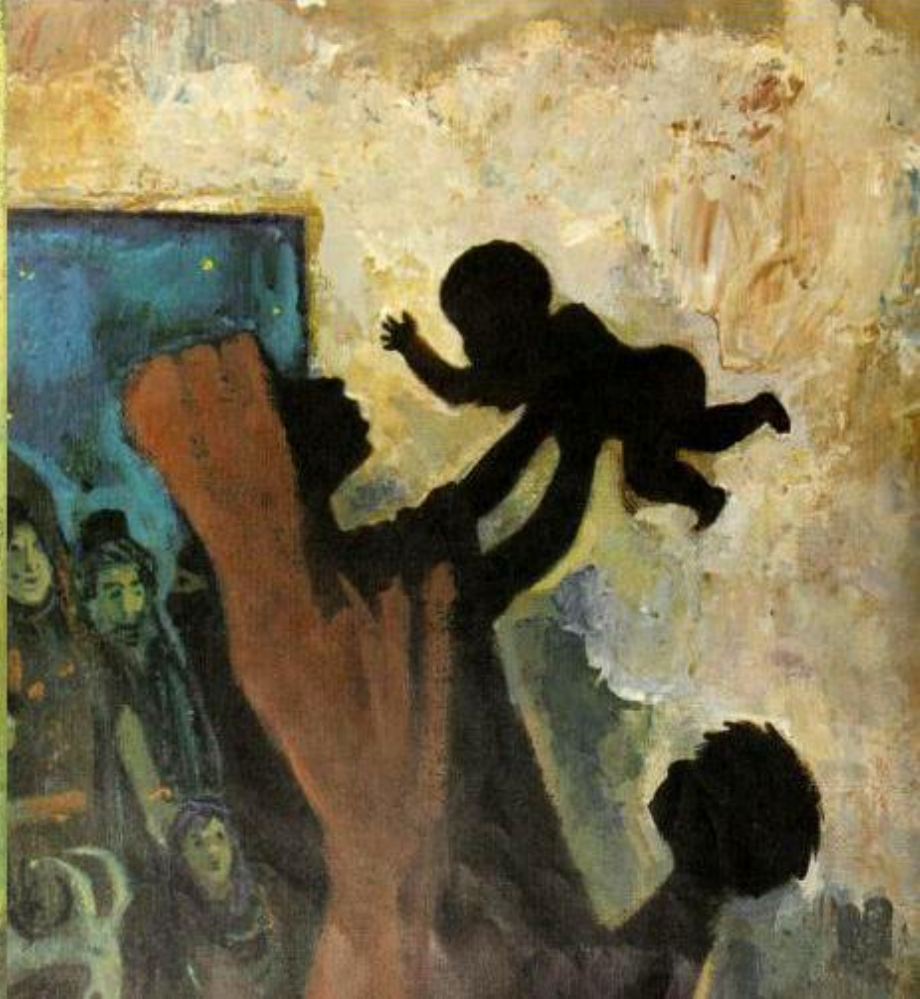

गरीब आदमी प्रसन्नता पूर्वक अपने परिवार के साथ बैठा अपने किये पर खुद ही विश्वास नहीं कर पा रहा था।

"समझदार बुद्धि? वाक्चातुर्य? साहसी हृदय?" मन ही मन उसने सोचा, "खैर, जो भी हो, कम-से-कम अब कोई प्यासा तो नहीं रहेगा।"